रात्रीक्लास 26.2.68 ओमशांति शिवजयंती

बच्चे बैठे हो यह तो बुद्धि में होगा अभी बाबा आये हुए हैं पुराने सम्बंध खतम कर नये सम्बंध में ले जाने। हम पुरानी दुनियां से नई दुनियां में जाने वाले हैं। यह भी बड़ी खुशी की बात है ना। भगवान पढ़ाते हैं यह भी खुशी की बात है। इतनी सब बातें खुशी देने लिए बाप समझाते रहते हैं। फिर भी कहते हैं बाबा मुरझाय जाते हैं। स्थिरियम रहती ही नहीं। कारण? बाप से जागीर का भी मालूम हुआ, यह भी निश्चय है पुरानी दुनियां खतम होनी है, स्वर्ग में तो जाने लिए तो खुशी होती है ना। जो भी मरते हैं कहते हैं स्वर्ग पधारा ;परंतु स्वर्ग में क्या पद वह कुछ भी पता नहीं। स्वर्ग कहा जाता है नई दुनियां को। यह तो नई दुनियां नहीं है। कई समझते हैं स्वर्ग तो यहां ही है। हम स्वर्ग में बैठे हैं। आगे नर्क था, अभी स्वर्ग हुआ है। मिट्टी ढोने वाले पास तो आजकल इतने पैसे हैं जो मिट्टी बदली सोना, चांदी, अशर्फियां ही अशर्फियां हैं ; परंतु स्वर्ग में तो दुःख का नाम नहीं होता है। यहां तो दुःख होती रहती है। अभी बच्चों ने परिचय तो सब जगह दिया ही होगा। अजन तो बहुत जगह पैगाम देने जाना है। तुम हरेक पैगम्बर–मैसेंजर हो और फिर पण्डे भी हो। पण्डे से भी मैसेज देने वाला अच्छा। सभी को कहो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। भक्तिमार्ग (में) भी आत्माएं परमात्मा को याद करती हैं। बुलाती रहती हैं। समझते हैं उनके आने से स्वर्ग स्थापन होगा। आत्मा जानती है बाप आकर स्वर्ग स्थापन करेंगे। वह आते ही हैं स्वर्ग स्थापन करने। फिर नर्क न रहेगा। जबकि नर्क तो स्वर्ग हो नहीं सकता। बुलाते भी सब हैं। साधु–संत आदि सब बुलाते रहते हैं। तुमको तो बहुतों को मैसेज देना है। भगवान आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। पतितों को पावन बनाते हैं। दुःखहर्ता–सुखकर्ता है ना 21 पीढ़ी तो भगवान ही सुख देते हैं। मनुष्य , मनुष्य को दे सके। कितनी सहज बातें हैं फिर भी समझने में कितना समय लग जाता है। 10वर्ष में भी प्रतिज्ञा कर फिर पतित बन पड़ते हैं अर्थात् बाप को भूल गए। तुम कहेंगे कल्प पहले मिसल ऐसा हुआ। अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग। पुरुषार्थ कर रहे हो। श्रेष्ठाचारी बनाने वाला मिला है। सतयुग की स्थापना करते ही हैं भगवान। तो अभी तुमको सहज समझ में आता है। आज के दिन बच्चों ने बहुत सर्विस की होगी। समाचार आते रहेंगे। तुम रुहानी सेना के सिपाही हो ना। समाचार सुनते2 फिर दिल होगी हम भी जाकर कोई का कल्याण करें। हीरे जैसा वह बनेंगे जो सर्विस कर बहुतों को आप समान बनाते हैं। कुमारियों के लिए तो बहुत सहज है। कोई भी बंधन नहीं। न पति , न बाल–बच्चे। निर्बंधन हैं। कुमारियों का भी झुंड तैयार होना चाहिए जो कुमारियों की सर्विस कर उन्हों को बचा ले। विषय सागर में जाकर कूदते हैं उनको बचा लेंगे। जिनमें ज्ञान है वही यह सर्विस करेंगे। ज्ञान है तो अपने हमजिंस को बचाना है। एक है विषय सागर से बचाना ,दूसरा है विषय सागर में गिरने से बचाना। जो गिरे हुए हैं उनको निकालना है। तुम्हारा काम है विषय सागर में गिरने से बचाना। नहीं तो खुद बचकर ही क्या किया? कुमारियां जिनमें ज्ञान है उनको आना चाहिए अपने हमजिंस को बचावें। खासकर कुमारियों को कुमारियों पर अटेंशन देना चाहिए। गिराने से बचाना चाहिए। यह हमारा फर्ज है। कोई को भी गटर में गिरने से बचाना चाहिए। अभी क्षीर सागर में जाना चाहिए या विषय सागर में? भक्तिमार्ग में आशीर्वाद वा कृपा आदि मांगते हैं। यहां तो कृपा आदि की बात ही नहीं। माथा किसको टेकेंगे। बिंदी है ना। बड़ी चीज को तो माथा भी टेको। छोटी चीज को तो माथा भी टेक न सके। हाथ किसको जोड़ेंगे। रेस्पांस तो करेंगे नहीं। यह भक्तिमार्ग की निशानियां सब गुम हो जाती हैं। हाथ जोड़ना यह भक्तिमार्ग हो जाता है। बहिन–भाई हैं, घर में हाथ जोड़ते हैं क्या? बच्चा मांगते ही हैं वारिस बनाने लिए तो बच्चा मालिक ठहरा ना। इसलिए बाप बच्चे को नमस्ते करते हैं। बाप तो बच्चों का सर्वेंट है ना। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रुहानी बापदादा का यादप्यार, गुडनाइट। नमस्ते।